6 राय कृष्णदास

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1892 ई०।
- **जन्म-स्थान**—काशी (उ० प्र०)।
- **उपनाम**—नेही।
- **पिता**—राय प्रह्लाददास।
- **रुचि**—चित्रकला, मूर्तिकला एवं पुरातत्त्व।
- **प्रारंभिक शिक्षा**—घर पर ही।
- **लेखन-विधा**—कविता, कहानी, गद्य काव्य, निबन्ध, कला सम्बन्धी रचनाएँ, अनूदित रचनाएँ।
- **भाषा**—संस्कृत शब्दों के साथ, उर्दू के व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग।
- **शैली**—भावात्मक, चित्रात्मक, गवेषणात्मक, आलंकारिक।
- **प्रमुख रचनाएँ**—भावुक, ब्रजरज, अनाख्या, सुधांशु, साधना, छायापथ।
- **उपाधि**—पद्म भूषण।
- **मृत्यु**—सन् 1980 ई०।
- **साहित्य में स्थान**—इन्हें गद्यगीत विधा का प्रथम रचनाकार माना जाता है।

राय कृष्णदास का जन्म काशी के प्रसिद्ध राय परिवार में सन् 1892 ई० में हुआ था। यह परिवार कला, संस्कृति और साहित्य-प्रेम के लिए विख्यात रहा है। भारतेन्दु परिवार से सम्बन्धित होने के कारण राय साहब के पिता राय प्रह्लाददास में अटूट हिन्दी-प्रेम था। इस प्रकार राय साहब को हिन्दी-प्रेम पैतृक-दाय के रूप में प्राप्त हुआ है। राय साहब की स्कूली शिक्षा बहुत स्वल्प हुई, पर इनमें उत्कट ज्ञान-लिप्सा थी। इन्होंने स्वतंत्र रूप से हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषाओं का अध्ययन किया और इनमें अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। सन् 1980 ई० में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म-भूषण' अलंकरण से सम्मानित किया और सन् 1980 ई० में ही इनका निधन हो गया।

राय साहब की साहित्यिक रुचि के विकास में काशी का तत्कालीन वातावरण भी बहुत दूर तक प्रेरक रहा है। साहित्यिक गतिविधियों के कारण बहुत प्रारम्भ में ही इनकी घनिष्ठता जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, रामचन्द्र शुक्ल आदि प्रमुख कवियों-आलोचकों से हो गयी। कुछ समय बाद ये काशी नागरी प्रचारिणी सभा के कार्यक्रमों में भी प्रमुख रूप से हाथ बँटाने लगे। भारतीय कला-आन्दोलन में भी राय साहब का अप्रतिम स्थान रहा है। इन्होंने 'भारत कला भवन' नामक एक विशाल संग्रहालय की स्थापना की थी जो अब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक विभाग है। इस संग्रहालय की गणना संसार के प्रमुख संग्रहालयों में की जाती है। इन्होंने भारतीय कलाओं का प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत किया है। भारत की चित्रकला तथा भारतीय मूर्तिकला इनके प्रामाणिक ग्रन्थ हैं। प्राचीन भारतीय भूगोल एवं पौराणिक वंशावली पर इन्होंने विद्वत्तापूर्ण शोध निबंध प्रस्तुत किये हैं।

राय साहब ने परम्परागत ब्रजभाषा में कविताएँ लिखी हैं, जो **'ब्रजरज'** में संगृहीत हैं। इनके **'भावुक'** नामक खड़ीबोली काव्य-संग्रह पर छायावाद का स्पष्ट प्रभाव है। राय साहब हिन्दी साहित्य में अपने गद्य-गीतों के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके गद्य-गीतों के संग्रह **'साधना'** और **'छायापथ'** के नाम से प्रकाशित हैं। **'संलाप'** और **'प्रवाल'** में इनके संवाद

शैली के निबंध संगृहीत हैं। इनकी कहानियाँ **'अनाख्या', 'सुधांशु'** और **'आँखों की थाह'** नामक संग्रहों में संकलित हैं। इन्होंने खलील जिब्रान के 'दि मैड मैन' का **'पगला'** नाम से हिन्दी में सुन्दर अनुवाद किया है।

राय कृष्णदास जी की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं–

कविता-संग्रह—खड़ीबोली में 'भावुक' तथा ब्रजभाषा में 'ब्रजरज'।

कहानी-संग्रह—'अनाख्या', 'सुधांशु', 'आँखों की थाह'।

कला-सम्बन्धी—'भारतीय मूर्तिकला', 'भारत की चित्रकला'।

गद्य-काव्य—'साधना', 'छायापथ', 'संलाप', 'प्रवाल'।

अनूदित—'दि मैड मैन' का 'पगला' नाम से हिन्दी रूपांतर।

कोमल भावनाओं को सजीव शब्द में प्रकट करना राय साहब की गद्य-शैली की प्रमुख विशेषता है। इनकी गद्य-शैली भावात्मक, सांकेतिक और कवित्वपूर्ण है। इन्होंने हिन्दी गद्य को एक नया आयाम प्रदान करके अपनी मौलिकता का परिचय दिया है। हिन्दी में गद्य-गीत की विधा का प्रवर्तन राय साहब ही ने किया। आधुनिक युग को गद्य का युग कहा जाता है, जिसकी विशेषता यह है कि गद्य ने अपनी शक्ति के द्वारा पद्य को भी आत्मसात् कर लिया है। वास्तव में पद्य व गद्य को पूर्णतः पृथक् नहीं किया जा सकता। इसका प्रमाण हमें इनके गद्य-गीतों में मिलता है। इन गीतों में पद्य की तरह तुक तो नहीं है परन्तु लय और संगीत पूर्णतः विद्यमान है। शब्द-चयन, वाक्य-विन्यास और अलंकारों के प्रयोग ने इन गद्य-गीतों को भव्यता प्रदान कर दी है। आत्मा और प्रकृति के सौन्दर्य का प्रकाश इन गद्य-गीतों में बिखरा हुआ दिखलायी पड़ता है। ये गीत सरल, सुगम और आकार में लघु हैं। काव्य की जटिलता से ये दूर हैं। इन्हें भले ही गाया न जा सके, पर गुनगुनाया जा सकता है।

राय कृष्णदास अपने गद्य-काव्य की मधुर एवं रमणीय शैली द्वारा पर्याप्त कीर्ति अर्जित कर चुके हैं। 'साधना' के निबंधों में जीवन और परमात्मा के बीच की क्रीड़ाओं के रेखांकन में राय साहब को अभूतपूर्व सफलता मिली है। इन निबंधों में मनमोहक ढंग से प्रिय और प्रिया की आँखमिचौनी के सजीव चित्र प्रस्तुत हुए हैं।

राय साहब की भाषा-शैली कवित्वपूर्ण होते हुए भी सहज और सरल है। न तो उसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का आग्रह है और न ही बोलचाल के सामान्य शब्दों की उपेक्षा। इसी प्रकार इनके वाक्य-विन्यास में भी कोई जटिलता नहीं है। कोमल भावनाओं को सजीव शब्दों में प्रकट कर देना राय साहब की गद्य-शैली की प्रमुख विशेषता है। इनकी गद्य-शैली भावात्मक, सांकेतिक और कवित्वपूर्ण है। इन्होंने संस्कृत शब्दों के साथ-साथ उर्दू के व्यावहारिक शब्दों का भी प्रयोग किया है। प्रान्तीय और ग्रामीण शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। अलंकरण का प्रयोग सहज रूप में हुआ है, किसी बनावट के साथ नहीं। मीरा के गीतों के समान भावुक हृदय की सहज अनुभूतियाँ इनके गीतों में प्रकट हुई हैं।

प्रस्तुत **'आनन्द की खोज, पागल पथिक'**, गद्य-गीत में यह बताया गया है कि आनन्द का स्रोत अपने अन्दर ही विद्यमान है। प्रायः लोग आनन्द की खोज वस्तुजगत् में करते हैं। उनकी यह खोज पता नहीं कितने जन्मों से चल रही है। लेकिन एक पल के लिए भी मनुष्य यदि अपने भीतर निहार ले तो निश्चित रूप से उसे आनन्द के अक्षय स्रोत का पता लग जायेगा। मनुष्य अशेष सृष्टि के साथ ज्यों ही आत्मीय सम्बन्ध स्थापित कर लेता है, त्यों ही उसे अपने सही स्वरूप का बोध हो जाता है। इस संसार का प्रत्येक व्यक्ति एक भ्रांत पथिक है। वह अशेष सुख और आनन्द की तलाश में है। उसकी तलाश निरंतर जारी है। लेकिन वह पूर्ण सुख और आनन्द की खोज के लिए जिस कल्पना लोक के स्वप्न रचता है, उस रचना का मुख्याधार यही वस्तुजगत् है। हम वस्तुजगत् के आधार पर ही कल्पना करते हैं। हमारी कल्पना समाज एवं बाह्य परिवेश से निरपेक्ष नहीं होती। अतः दूसरे लोक की कल्पना करते समय इस जगत् से कट जाना भ्रांति है। सच्चाई तो यह है कि इस जागृति के भीतर ही हमें पूर्ण सुख और आनन्द की प्राप्ति हो सकती है, लेकिन इसके लिए हमें अपने सही स्वरूप को जानने का प्रयास अवश्य करना पड़ेगा।

राय कृष्णदास भारतीय कला के पारखी और साहित्य के प्रमुख साधक थे। आप गद्य-गीत के लेखक के रूप में विख्यात हैं। इन्हें गद्य गीत विधा का पहला रचनाकार माना जाता है। भारतीय साहित्य में इन्हें हिन्दी के प्रतिनिधि कहानीकार के रूप में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है।

●●●

आनन्द की खोज पागल पथिक

● आनन्द की खोज

आनन्द की खोज में मैं कहाँ-कहाँ न फिरा? सब जगह से मुझे उसी भाँति कलपते हुए निराश लौटना पड़ा जैसे चन्द्र की ओर से चकोर लड़खड़ाता हुआ फिरता है।

मेरे सिर पर कोई हाथ रखनेवाला न था और मैं रह-रहकर यही बिलखता कि जगन्नाथ के रहते भी मैं अनाथ कैसे रहता हूँ, क्या मैं जगत् के बाहर हूँ?

मुझे यह सोचकर अचरज होता कि आनन्द-कन्द-मूलक इस विश्व-वल्लरी में मुझे आनन्द का अणुमात्र भी न मिला। हा! आनन्द के बदले में रुदन और शोच परिपोषित कर रहा था।

अन्त को मुझसे न रहा गया। मैं चिल्ला उठा—आनन्द, आनन्द, कहाँ है आनन्द! हाय! तेरी खोज में मैंने व्यर्थ जीवन गँवाया। बाह्य प्रकृति ने मेरे शब्दों को दुहराया, किन्तु मेरी आन्तरिक प्रकृति स्तब्ध थी। अतएव मुझे अतीव आश्चर्य हुआ। पर इसी समय ब्रह्माण्ड का प्रत्येक कण सजीव होकर मुझसे पूछ उठा—क्या कभी अपने-आप में भी देखा था? मैं अवाक् था।

सच तो यह है। जब मैंने—उसी विश्व के एक अंश—अपने-आप तक में न खोजा था तब मैंने यह कैसे कहा कि समस्त सृष्टि छान डाली? जो वस्तु मैं ही अपने-आपको न दे सका वह भला दूसरे मुझे क्यों देने लगे?

परन्तु, यहाँ तो जो वस्तु मैं अपने-आपको न दे सका था वह मुझे अखिल ब्रह्माण्ड से मिली, जो मुझे अखिल ब्रह्माण्ड से न मिली थी वह अपने-आप में मिली!

● पागल पथिक

'पथिक'—मैंने पूछा—"तुम कहाँ से चले हो और कहाँ जा रहे हो? तुम्हारी यात्रा तो लम्बी मालूम पड़ती है क्योंकि तुम्हारा तन सूखकर काँटा हो रहा है और उस पर का फटा वस्त्र तुम्हारे विदीर्ण हृदय की साख भर रहा है। श्रम से हारकर तुम्हारे पैर फूट-फूटकर रक्त के आँसू रो रहे हैं! यह बात क्या है?"

उसने दैन्य से दाँत निकालकर उत्तर दिया—"बन्धु मैं अपना मार्ग भूल गया हूँ। इस संसार के बाहर एक ऐसा स्थान है जहाँ इसके सुख और विलास की समस्त सामग्रियाँ तो अपने पूर्ण सौन्दर्य में मिलती हैं पर दुःख का वहाँ लेश भी नहीं है। मेरे गुरु ने मुझे उसका ठीक पता बताया था और मैं चला भी था उसी पर। किन्तु मुझसे न जाने कौन-सी भूल हो गयी है कि मैं घूम-फिरकर बार-बार यहीं आ जाता हूँ। जो हो, मैं कभी न कभी वहाँ अवश्य पहुँचूँगा।"

मैंने सखेद कहा, "हाय! तुम भारी भूल में पड़े हो। भला इस विश्व-मण्डल के बाहर तुम जा कैसे सकते हो? तुम जहाँ से चलोगे फिर वहीं पहुँच जाओगे। यह तो घटाकार न है। फिर, तुम उस स्थान की कल्पना तो इसी आदर्श पर करते हो और जब तुम्हें इस मूल ही में सुख नहीं मिलता तब अनुकरण में उसे कैसे पाओगे? मित्र, यहाँ तो सुख के साथ दुःख लगा है और उससे सुख को अलग कर लेने के उद्योग में भी एक सुख है। जब उसे ही नहीं पा सकते तब वहाँ का निरन्तर सुख तो तुम्हें एक अपरिवर्तनशील बोझ, नहीं यातना हो जायेगी। अरे, बिना नव्यता के सुख कहाँ? तुम्हारी यह कल्पना और संकल्प नितान्त मिथ्या और निस्सार है, और इसे छोड़ने ही में तुम्हें इतना सुख मिलेगा कि तुम छक जाओगे।"

परन्तु उसने मेरी एक न सुनी और अपनी राम-पोटरिया उठाकर चलता बना।

—राय कृष्णदास

अभ्यास प्रश्न

➡ गद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) आनन्द की खोज में मैं कहाँ-कहाँ न फिरा? सब जगह से मुझे उसी भाँति कलपते हुए निराश लौटना पड़ा जैसे चन्द्र की ओर से चकोर लड़खड़ाता हुआ फिरता है।

मेरे सिर पर कोई हाथ रखनेवाला न था और मैं रह-रहकर यही बिलखता कि जगन्नाथ के रहते भी मैं अनाथ कैसे रहता हूँ, क्या मैं जगत् के बाहर हूँ?

मुझे यह सोचकर अचरज होता है कि आनन्द-कन्द-मूलक इस विश्व-वल्लरी में मुझे आनन्द का अणुमात्र भी न मिला। हा! आनन्द के बदले में रुदन और शोच परिपोषित कर रहा था।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) पथिक ने आनन्द की खोज में कहाँ-कहाँ भ्रमण किया?

(iv) पथिक ने अपनी तुलना किससे की है?

(v) पथिक को आनन्द के बदले क्या प्राप्त हुआ?

(ख) अन्त को मुझसे न रहा गया। मैं चिल्ला उठा– आनन्द, आनन्द, कहाँ है आनन्द! हाय! तेरी खोज में मैंने व्यर्थ जीवन गँवाया। बाह्य प्रकृति ने मेरे शब्दों को दुहराया, किन्तु मेरी आन्तरिक प्रकृति स्तब्ध थी। अतएव मुझे अतीव आश्चर्य हुआ। पर इसी समय ब्रह्माण्ड का प्रत्येक कण सजीव होकर मुझसे पूछ उठा– क्या कभी अपने-आप में भी देखा था? मैं अवाक् था।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) लेखक किस बात से अवाक् था?

(iv) लेखक को इस बात का पता कैसे चला कि आनन्द का स्रोत कहाँ है?

(v) किसकी खोज में पथिक ने अपना जीवन व्यर्थ गँवाया?

(ग) 'पथिक'– मैंने पूछा– "तुम कहाँ से चले हो और कहाँ जा रहे हो? तुम्हारी यात्रा तो लम्बी मालूम पड़ती है क्योंकि तुम्हारा तन सूखकर काँटा हो रहा है और उस पर का फटा वस्त्र तुम्हारे विदीर्ण हृदय की साख भर रहा है। श्रम से हारकर तुम्हारे पैर फूट-फूटकर रक्त के आँसू रो रहे हैं! यह बात क्या है?"

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) पथिक किसका प्रतीक है?

(iv) पथिक का शरीर सूखकर क्यों काँटा हो रहा है?

(v) पथिक की यात्रा का गन्तव्य क्या है?

(घ) उसने दैन्य से दाँत निकालकर उत्तर दिया– "बन्धु मैं अपना मार्ग भूल गया हूँ। इस संसार के बाहर एक ऐसा स्थान है जहाँ इसके सुख और विलास की समस्त सामग्रियाँ तो अपने पूर्ण सौन्दर्य में मिलती हैं पर दुःख का वहाँ लेश भी नहीं है। मेरे गुरु ने मुझे उसका ठीक पता बताया था और मैं चला भी था उसी पर। किन्तु मुझसे न जाने कौन-सी भूल हो गयी है कि मैं घूम-फिरकर बार-बार यहीं आ जाता हूँ। जो हो, मैं कभी न कभी वहाँ अवश्य पहुँचूँगा।"

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) पथिक कौन-सा मार्ग भूल गया है?

(iv) पथिक घूम-फिरकर बार-बार कहाँ आ जाता है?

(v) वह स्थान कौन-सा है जहाँ दुःख का नामोनिशान नहीं है?

➥ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. राय कृष्णदास की जीवनी एवं कृतियों का उल्लेख कीजिए।
2. राय कृष्णदास का साहित्यिक परिचय दीजिए।
3. राय कृष्णदास की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. 'आनन्द की खोज, पागल पथिक' नामक पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
5. निम्नलिखित सूक्तिपरक वाक्यों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—
   (क) 'आनन्द के बदले रुदन और शोच को परिपोषित कर रहा था।'
   (ख) 'परंतु, यहाँ तो जो वस्तु मैं अपने-आपको न दे सका था, वह मुझे अखिल ब्रह्माण्ड से मिली, जो मुझे अखिल ब्रह्माण्ड से न मिली थी वह अपने-आप से मिली!'
   (ग) 'यहाँ तो सुख के साथ दुःख लगा है और उससे सुख को अलग कर लेने के उद्योग में भी एक सुख है।'
   (घ) 'अरे, बिना नव्यता के सुख कहाँ?'
6. गद्य-गीत से आप क्या समझते हैं? एक श्रेष्ठ गद्य-गीत की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

➥ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक को आनन्द की अनुभूति किस स्थिति में हुई?
2. पागल पथिक का गन्तव्य क्या था? क्या कोई पथिक इस विश्व-मण्डल के बाहर जा सकता है?
3. 'आनन्द की खोज' और 'पागल पथिक' उपशीर्षकों के मूल प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए।
4. प्रस्तुत निबंध के आधार पर राय कृष्णदास की भाषा-शैली की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।
5. गद्य-गीत और कविता में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

●●●